अशोक मिश्र

ई-मेल:amishrafaiz@gmail.com

रोजगार

वह एक बेरोजगार लड़की थी। प्रतिदिन घर से सीवी लेकर निकलती, तमाम कारपोरेट दफ्तरों के चक्कर लगाती और शाम को घर लौट आती। उसे लगता था कि किसी न किसी दिन उसे रोजगार जरूर मिल जाएगा।

एक दिन उसका मोबाइल पिनपिनाया। उधर से उसका नाम कन्फर्म कर बात करने वाले ने कहा—"आप आज शाम को लवर्स प्वाइंट पर मिलना।"

वह शाम होते ही दिए गए प्वाइंट पर जाकर इंतजार करने लगी। कुछ देर बाद एक कार आकर रुकी। उस दफ्तर के बास ने उसे गाड़ी में बैठा लिया।

कुछ देर बाद लड़की ने पूछा, "आखिर हम कहाँ जा रहे हैं?"

बास ने कहा, "देखो भाई, हम एक हाथ देने और दूसरे हाथ लेने में विश्वास रखते हैं।"

उसने कहा, "आखिर आप मुझसे चाहते क्या हैं?"

उधर से जवाब मिला, "आज की रात मुझे इंटरटेन करो; यह रहा तुम्हारा एप्वाइंटमेंट लेटर!"

लड़की ने कार रुकवाई। मिर्ची पाउडर का पूरा पैकेट उस बास के चेहरे पर फेंका और कार से उतर गई।

दूसरे दिन उसकी सहेली ने पूछा, "आखिर क्या हुआ तुम्हारे जॉब का?"

उसने कहा, "वह बास मेरे साथ सोना चाहता था कुत्ता था कुत्ता! इसलिए मैंने उसके चेहरे पर थूक दिया।"

अगले दिन वही लड़की एक और कंपनी में इंटरव्यू देने के लिए बोर्ड के सामने थी। सामने बैठे दो लोगों ने उससे पूछा—"आपको गाना आता है?"

जवाब में उसने 'ओम जय जगदीश हरे' सुना दिया।

उधर से नियोक्ता ने कहा, "यह क्या! आरती सुनाने को थोड़े न कहा था। कोई मस्त, सेक्सी आइटम डांस करके दिखाइए।"

नौकरी का मामला था। उसे थोड़ी झुंझलाहट तो हुई; लेकिन उसने सोचा कि डांस करने से नौकरी मिलती है तो क्या बुरा है! सो उसने डांस करके दिखा दिया। फिर कहा गया—"आप दफ्तर में जॉब लायक नहीं हैं। आपका यह रवैया आपके चरित्र पर सवाल है।"

उसने कहा—"चरित्र तो पुरुषों का ही होता है; बाकी आप जो कहें, वह सही है।"

इस बार भी नौकरी उसके हाथ से फिसल गई।

उसने तय किया कि वह नौकरी नहीं करेगी और कुछ दिनों बाद उसने एक 'टूर एंड ट्रेवेल्स' कंपनी खोल ली। फिर तो जितने भी पुरुष नौकरी माँगने आए, सबको दुत्कार कर उसने सारी नौकरियाँ लड़कियों में बाँट दीं। एक साल बाद ही उसकी कंपनी चल निकली।